व्यापार मंदिर, गबन बनाम छः बीघा जमीन

-प्रो. शिव प्रसाद शुक्ल

आर्यावर्त के अमृत महोत्सव वर्ष में यातायात, बाँध, मंदिर एवं गबन चारों ओर दिखाई दे रहा है। कहीं न कहीं भक्ति के नाम लोगों की संवेदनाओं के साथ कालाबाजारी पहले से होती आ रही है। यातायात, बाँध, मंदिर, ताजमहल, अकबर का मकबरा के नाम भूमि अधिग्रहण की कला सिखाई गई, फकीर मोहन सेनापति के उपन्यास छ: बीघा जमीन के मारफत। बौद्धिक कांइयापन पहले से आर्यावर्त में बौद्ध बिहार एवं जैन देरासर के मारफत मौजूद रहा। दास, सामंती, पूँजीवादी लोकतांत्रिक या निगमिक पूँजीवादी का लेवल लगाकर सांस्कृतिक राष्ट्र को नया कलेवर देनेवाले निजीकरण, बाजारीकरण एवं वैश्वीकरण के नाम लोगों को बरगलाया जा रहा है। छ: बीघा जमीन उपन्यास में सत्ताईस अध्याय एवं उपसंहर हैं। रामचंद्र, मंगराज जैसे लोग हर युग में लोगों को उल्लू बनाते रहे या यों कहें बिचौलियों का ही बोलबाला समग्र विश्व में व्याप्त है। रंगभूमि का सूरदास, गोदान का होरी लड़ता है। नर्मदा बाँध में मेधा पाटेकर एवं अरुंधति रॉय का लड़ने का ढंग बिल्कुल अलग है या लड़ने वाले भी सरकार के मोहरे बनते जा रहे हैं। भक्ति आंदोलन के चलते भारतीय भाषाएँ तो प्रकाश में आई परंतु भारतीय भाषाओं को घाट लगाने का काम अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा कर रही है। डॉ. के.सी. भट्टाचार्य की किताब 'उड़िया भाषा नय' पढ़ने के बाद ब्रजमोहन सेनापति उर्फ, फकीर मोहन सेनापति तिलमिला गए और उड़िया भाषा में लिखना शुरू किए। भक्तिकाल के पहले कितनी भारतीय भाषाएँ प्रकाश में थीं, इसका भी लेखा-जोखा किया जाना चाहिए। यानी भाषा भी उपनिवेश, नवउपनिवेश और उत्तर सांस्कृतिक उपनिवेश का सबसे बड़ा हथकण्डा है। वर्ण एवं शब्दों के साथ इतना बड़ा खिलवाड़ भारतीय समाज की फितरत में है। कालिन्दीचरण पाणिग्रही का मंतव्य है कि "शेख दिलदार मिदनापुर का एक बड़ा जमींदार था, जिसकी जमींदारी उड़ीसा में थी। रामचंद्र मंगराज उसी जमींदारी का था और उसके कारिंदे का काम करता था। लगान की वसूली में तो वह सवा सोलह आने यमदूत था, लेकिन वसूली के बाद अधिकांश आय वह आप ही हड़प लिया करता था। अपने मालिक दिलदार को वह यह कह कर धोखा दिया करता था कि फसलें मारी जाती हैं, जिससे किसान लगान चुकाने से मजबूर रहते हैं।"[1]

रामचंद्र मंगराज एक सामान्य आदमी से धीरे-धीरे अरबपति बनता चला गया। आज भी धीरूभाई अम्बानी 500 रुपए से व्यापार करने वाले के बच्चे रामचंद्र मंगराज की तरह अरबपति बनते जा रहे हैं। रामचंद्र मंगराज भी भक्ति का बाना अपनाकर लोगों को लूट रहे थे और आज के रामचंद्र मंगराज शिक्षा, राजनीति, धर्म, गाँव, जिला, तहसील, प्रदेश, देश एवं विश्व को लूट रहे हैं। फकीर मोहन सेनापति बहुत ही जीवंत भाषा में रामचंद्र मंगराज का चित्र खींचते है। "(वे)एकादशी के दिन जल और तुलसी–दल ही उनके अवलंब होते हैं।

उस दिन तीसरे पहर मंगराज के ख्वासजगा नाई ने बातों ही बातों में यह बात कह डाली थी कि हर एकादशी को सांझ को द्वादशी की पारणा के लिए मालिक के सोने के कमरे में सेर-भर दूध - सी खील कंद मिसरी, पके केले आदि रख छोड़ जाते हैं और वह (अर्थात खवास) द्वादशी के दिन नूर के तड़के उठकर रीते पड़े बर्तन मांजता है।"[2] रामचंद्र मंगराज की खोखली भक्ति को आज के साधु अपनाकर आश्रम पूरे विश्व में बना रहे हैं। किसी की जमीन धान या जायदाद हड़पना हो तो रामचंद्र मंगराज से सीखिए: " भिखारा पंडे ने मूल पाँच रूपए कर्ज लिए थे, जिसका सूद चक्रवृद्धि ब्याज के हिसाब से बारह रुपये पाँच आने ग्यारह गंडे दो कौड़ी पड़ता है, दोनों की कुल मीज़ान में से सतरह रूपए पाँच आने दो पैसे वसूल पाए गए और इस तरह सच पूछिए तो छूट केवल डेढ़ गण्डा कौड़ियों की ही है।"[3] 1897 या 1902 ई0 में प्रकाशित छ: बीघा जमीन या रंगभूमि या गोदान में क्या होता है? संजीव के फॉस में किसान आत्महत्याएँ कर रहे हैं तो भगिया - सारिया कर्ज एवं धोखा धड़ी में मरते हैं तो सूरदास एवं होरी का भी यही हाल है परन्तु ढंग हर प्रदेश के अलग-अलग लूटने के होते हैं। लूटने वालों की संतानें बाद में लूटने वालों को ही चूना लगाती हैं।

रामचंद्र मंगराज के तीनों बेटे एवं बहुएं एक से एक बढ़कर हैं। इसीलिए गोविंदपुर हाट के गाँजे व्यापारी का वक्तव्य ध्यातव्य है. "अरे जा जा! मत ले माल। अकेले मालिक के घर के बाबुओं के लिए ही माल पूरा नहीं पड़ता।"[4] यानी रामचंद्र मंगराज एवं पुत्रों के बीच अच्छे सम्बंध नहीं हैं। राजा महाराजाओं की तरह वे भी संतानों के सुख के लिए दूसरों को लूट रहे हैं। उनके बेटे खुद उनकी संपत्ति विनष्ट करने पर तुले हैं। रामचंद्र मंगराज भी किसी से कम नहीं हैं। रहीमदास के शब्दों में 'उरग तुरग नारी नृपति/ नीच जाति हथियार। रहिमन इन्हें संभालिए। पलटत लगे न बार /' "छठें अध्याय " चम्पा उर्फ चम्पा मालकिन उर्फ हरकला के साथ मंगराज कुल का क्या सम्बंध है? यह कहना हमारी शक्ति के बाहर है। ×××× और तो और, खुद मालकिन की शक्ति से भी उसकी शक्ति कहीं अधिक बढ़ी चढ़ी है। बाहर के हलवाहे-मजूरे और कचहरी के 'करण' तक उनके आगे हाथ जोड़े रहते हैं।"[5] फकीर मोहन सेनापति की व्यंग्यात्मक भाषा बहुत कुछ कह जाती है। शेख करामत अली आरा, मेदिनीपुर से होते होते उड़ीसा तक अच्छे घोड़े बेचने का व्यापार बढाया था। साहेब मौसूफ खुश होकर "भारत के भाग्य में विधाता ने ऐसा ही लेख जड़ दिया है कल फारसी थी, आज अंग्रेजी है और आगे क्या होगा सो राम जाने। ××××मियाँ जी उलटी कलम से छूँछा नाम लिखकर जमींदार हो गए और हम हैं कि 'सीधी' कलम से लम्बे लम्बे 'ऐसे' लिखकर भी रोटी तक नहीं जुटा पाते। ऐसे बाबू यह जानते हैं कि क्या 'भाग्यम् फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरूषम्'।"[6] भ्रष्टाचार भारतीयों के D.N.A.. में है। शेख करामत अली ने जैसे -तैसे लूटा तो शेख दिलदार मियाँ से हड़पने का काम रामचंद्र मंगराज ने किया। "इतिहास के लेखकों का कहना है कि दिल्ली के बादशाह से बंगाल की सूबेदारी हासिल करने में क्लाइव साहब को इतना कम समय लगा था कि यदि एक गधे की खरीद बिक्री के लिए भी उससे कहीं अधिक समय आवश्यक है। फिर,फतेहपुर सरसंड की तहसीलदारी और

समस्त इतर क्षमता प्राप्त करने में मंगराज को ही विलंब क्यों लगने लगा ?"[7] छोटे से लेकर बड़े तक को पहले भी आज भी रामचंद्र मंगराज जैसे लोग चूना लगा रहे हैं। दसवें अध्याय में भगिया और सारिया की दास्तान, होरी एवं धनिया जैसी ही है। मंदिर के नाम जिस तरह आज के बाबा जमीनें अधिगृहीत करते जा रहे हैं उसी तरह रामचंद्र मंगराज भी भगिया और सारिया की जमीन मंदिर बनवाने के उपलक्ष्य में गिरवी रख लेता है। लोगों का मन्तव्य इन लोगों के बारे में है "भगिया पगला सारिया पगली, बगले को मिली कैसी बगली"[8] भगिया और सारिया की नेत गाय को येन केन प्रकारेण रामचंद्र मंगराज हड़प लेता है। ग्यारहवें अध्याय में गोबरा जेना के मारफत "पुरानी पुलिस बड़ी घुसखोर थी।"[9] तो आज की पुलिस ज्यादा ईमानदार तो दिखायी नहीं देती है। कोई भी जेल जाता उनके बच्चों को गोवर्धन मंगराज से दान या उधार लेकर पालता और बाद में उसकी जमीन जायदाद मंगराज के नाम करवा देता। असुर दिग्घी तालाब छुआछूत का गढ़ था और आज भी छुआछूत लोगों के मस्तिष्क से निकला नहीं है। भगिया सारिया संतानोत्पत्ति के लालच में चम्पा के झांसे में आ जाते हैं:

"होंहि न जा घर लड़िका बारे।
ता मुख हेरू न कबहु सकारे
तीन- पूत-वारी सुलक्षणी। बाँझ - बिसूकी गाम पोंछनी।
जा घर धी कै पूतन कोई/ परम अभागिन दुखिया सोई।"[10]

चम्पा की चाल-ढाल किसी से छिपी नहीं है। मंगराज की सहायता करने में शातिर है। कटक तक मामला जाने के बाद भी चम्पा सुनती नहीं है। "बगीचे का दस-बीस छकड़ा पत्थर मंगला के पास ढ़ो– ढ़ोकर पहुँचा दिया गया !और भी मालकिन कहती हैं क्या तो कि सरिया की छै 'माण' आठ 'गूंठ' धरती छोड़ दो, क्या तो कि उसका घर मत उजाड़ो।"[11] पंद्रहवें अध्याय में बाघ सिंह के वंश के दबदबे को हर जातियों पर दिखाया गया है। बाघसिंह वंश का नारा "लाठी सर्वार्थ साधिका"[12] के तहत डोमों को सबक सिखाने के लिए मंगराज ने दो थैली रुपए खर्चे। गोबिन्दपुर से रतनपुर तक मंगराज की गायों द्वारा खेती उजाड़ी जा रही थी। बाघसिंह के बेटे चंद्रमणि सिंह की शादी फतेह सिंह की बेटी से हुई। उस समय औरतें कितना आचार विचार करती थी "आचार से लक्ष्मी, विचार से सरस्वती "[13]बाघसिंह का घर कैसे जला? और फतेहसिंह अपनी बेटी को साथ लेते गए। अठारहवें अध्याय में मालकिन की मृत्यु , उसके गुणों एवं अवगुणों की परिचर्चा देखते बन रही है। मंगराज की मनोदशा का अच्छा चित्रण सेनापति जी ने किया है। "मंगराज के जीवन में दो नदियाँ प्रवाहित थीं। एक थी उत्ताल तरंगमयी, सर्पकुंभीरसंकुला, कूलप्लाविनी चर्मण्वती और दूसरी अंतसस्रोत पूतसलिला कुलपावनी फल्गु।"[14]फकीर मोहन सेनापति के व्यंग्य ब्राह्मणों एवम मंगराज के प्रति काफी बेधक मार्मिक एवं रहस्योद्घाटक हैं। मालकिन की चिर बिदाई एवं चम्पा का राज बहुत कुछ असंगत कार्य मंगराज से करवाया। उन्नीसवें अध्याय में पुलिस जांच शेख इनायत हुसैन दारोगा का दबदबा गोबरा जेना, सना, रणा

मरुआ आदि गवाहों ने जो गवाही दी और चौथे गवाह बाइधर महांती, पांचवें चम्पा, बना जेना, धकेइ जेना एवं खतुचंद की गवाही बहुत कुछ बयान कर जाती है। मंगराज को हथकड़ी लगी वही हाल मन्नू भण्डारी के महाभोज की तरह है: "चार नम्बर गवाह के इजहार से साफ साबित है- इन सारे हालत के लिहाज से असामी के ऊपर खून के साबित हो जाने से हुजूर के पास चालान किया हुजूर खुदाबंद मां बाप दुनिया के बादशाह - कसूर माफ होगा और नौशेरवानी इनसाफ तजवीज होगा।

10 तारीख अक्तूबर सन 1831-

दारोगा इनायत हुसैन,

थाना केंदरापाड़ा।"[15]

सारिया की मौत मंगराज के साथ भगिया को भी जेल में बंद करना पहले भी था और आज भी बदलते परिवेश में दिखायी दे रहा है। बीसवें अध्याय में वकील राम राम लाला के सम्बंध में गोपी सिंह का मंतव्य द्रष्टव्य है: "कहे मुवक्किल बचा मौसा, कहे वकील कि ला पैसा।" [16]मंगराज से भी कहीं ज्यादा चालाक राम राम लाला वकील सबकुछ स्टैम्प पेपर पर लिखाने के बाद केस की पैरवी शुरू की। इक्कीसवें अध्याय कटक- दौरा-अदालत के अंतर्गत रामचंद्र मंगराज की जद्दोजहद देखते बन रहा है। "असामी रामचंद्र मंगराज को खून के इलजाम से बरी किया जाए और नेत नाम की गाय हड़प कर लेने के जुर्म में छै माह की कैद-बा-मुशक्कत व पाँच सौ रुपये के जुरमाने की सजा दी जाए और जुरमाने के वसूल न हो पाने की सूरत में उसे तीन महीने और कैद रखा जाए। इति।

मई के महीने की 17वीं तारीख सन् 1837 ई.।

एच.आर. जॅकसन, सेशन जज"[17]

बाइसवें अध्याय में गोपी साहू की दुकान पर गोविन्दा एवं चम्पा के संवाद काफी रोचक एवं रहस्योदघाटक एवं मार्मिक हैं। तेईसवें अध्याय कर्मफल में व्यक्ति गुण अवगुण जानता है परन्तु अवगुण के काम ज्यादा करता है। रामचंद्र मंगराज , चम्पा,गोविन्दा, केवट चांदिया बेहरा एवं हम सब को अपने कार्यों का फल भोगना पड़ता है। जमादार गवाहों की गवाही के आधार पर केस को रफा दफा चौबीसवें अध्याय में करता है। आज भी पुलिस सही को गलत एवं गलत को सही कर रही है। उच्च या उच्चतम न्यायालय कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं।

इस उपन्यास में ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर कब,कैसे, किसका विनाश हुआ, इसका भी जिक्र रोचक है। "अलाउद्दीन से लेकर रणजीतसिंह तक इस बात के ज्वलंत प्रमाण मौजूद है। ***** बाघसिंह का वंश तीन-तेरह हो गया, सारिया का धन भी गया, जान भी गई अब मंगराज के वंश की बात रही, सो वह भी

उसी रास्ते आन पड़ा है।"[18] छब्बीसवें अध्याय में ललितादास मंगराज की छोटी बहू मरूआ को लेकर लापता है। "जिस दरवाजे दिन को दिन और रात को रात मानकर, लोग आवाजाही लगाए रहते थे, वहाँ अब दूब छा गई है। सौ बात की एक बात, कुछेक माह के भीतर ही संपत्ति, गौरव, आधिपत्य आदि सभी कुछ स्वाहा हो चुके हैं।'निर्जगाम यदा लक्ष्मी: गजभुक्तकपित्थवत् ।"[19] मंगराज अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं: संयोग से रतनपुर मौजे के छै डोम, गोबरा जेना और मंगराज, ये आठ जने एक ही बारक में आ रहे। ***** (भगिया) "मेरी सरिया री सारिया; मेरे छै 'माण' आठ 'गुण्ठ ' रे छै 'माण ' आठ 'गुण्ठ'(बकता –बकता)***अचानक वह छूटता ही चला आया और दाँतों से मंगराज की नाक काटकर अलग कर डाली ।**** रोगी के बच पाने की संभावना बहुत कम है, उसके कुटुम्बी चाहें तो चिकित्सा के लिये उसे घर ले जा सकते हैं। ***बेटों ने धान की बखार की पेंदी तक पोंछ पाँछ के लगभग साफ कर डाली थी। वे अपने बाप को अच्छी तरह जानते हैं। वह लौट आए, तब तो समझो कि खैर नहीं।****बूढा हलवाहा मुकुंदा बहुत परेशान हुआ। उसने जैसे –तैसे दो बछड़े और चार- छै तंगी पलान आदि बेच बाचकर कुछ रुपए जुटाए और एक डोली लेकर हड़बड़ाया हुआ कटक की ओर दौड़ पड़ा ।[20]

उपसंहार सामान्यतया शोध प्रबंधों में होता है । इम उपन्यास के उपसंहार के अन्तर्गत मंगराज की दुर्दशा का वर्णन काफी समीचीन एवं समसामयिक है।'उसने कहा था' कहानी की तरह मरते समय मंगराज इतना भयभीत एवं डरा हुआ है कि "भागिया जैसे हजारों हजार पागल आकाश मार्ग में तिर रहे घोर काले मेघों में से निकले आ रहे हैं और सभी के हाथों में तलवारें तथा लोहे के मुगदर है। ****मंगराज की आत्मा उसी मूर्ति को लक्ष्य बनाकर धावित हुई। मंगराज की हवेली में रोर उठा: राम नाम सत्त है ! हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल।"[21]मनुष्य को अपने कर्मों का फल आज नहीं कल मंगराज की तरह भोगना पड़ता है। कुछ लोग इस उपन्यास को नियतिवादी मानते हैं परन्तु तमाम राजा-महाराजाओं, नेताओं एवं पार्टियों के पतन को देखते हुए यह उपन्यास नियतिवादी नहीं लगता है। सत्ताइस अध्याय एवं उपसंहर को मिलाकर 144 पृष्ठों में युगजीत नवलपुरी द्वारा अनुदित उड़िया उपन्यास "छै बीघा जमीन" काफी लोकभोग्य है और लोगों को सबक भी भली प्रकार सिखाता है। उड़िया के शब्द कहीं भी किसी प्रकार का व्यवधान सम्प्रेषण में नहीं डालते हैं। आद्यंत ऐतिहासिक एवं व्यंग्यात्मक शैली में समसामयिक मुद्दों को रामचंद्र मंगराज से आवेष्टित करके इस तरह से फकीर मोहन सेनापति लिखते हैं कि सहृदय पढ़कर यथार्थ का एहसास करते हैं। अंतर्वस्तु एवं शिल्प उड़िया एवं हिन्दी अनुवाद में काफी रोचक ढंग से बरकरार है। घटनाओं, भावनाओं एवं संवेदनाओं का सार्थक शाब्दिक विन्यास उड़िया एवं हिन्दी में आद्यंत देखते बन रहा है। संस्कृत श्लोकों का समय –समय पर विनियोग बहुत कुछ कह जाता है

"अज्ञानतिमिराच्चस्य ज्ञानञ्जनशलाकया।

चक्षुरुन्मीलितम् येन , तस्मै श्री गुरवे नमः।"[22]

भावात्मक शोषण का पर्दाफाश छः बीघा जमीन में आद्यंत गहराई के साथ किया गया है आज के लोग भी श्रेय एवं प्रेय को जानते हैं परंतु प्रेय का ही वरण कर रहे हैं ।बीच-बीच में गीत युक्त संवाद भी उपन्यास के पात्रों की चालाकी को ही खोलते हैं;

"पानी पीना छानके,
धन लेना गिन-गानके "[23]

बड़ी शिद्दत के साथ उस समय की अनियमितता का यथार्थ बहुत ही सारगर्भित भाषा में सेनापति जी ने लिखा है ।जो पात्र जिस तरह का है उसकी भाषा में संवाद लिखना कहीं न कहीं सेनापति के लोकसंपृक्ति का द्योतक है। पहले भी जारकर्म होता था आज भी हो रहा है और समय ,परिस्थिति के आधार पर होता रहेगा। इसका जिक्र चम्पा यों करती है:

"देख पडोसिन के पीठे को छटपट करती छाती
गोंयठे में गुड़ डाल पड़ोसिन भस्सर-भसर चबाती।"[24]

स्त्री को जारकर्म से मुक्ति जाने-अनजाने किसी युग में नहीं मिली ।विमर्श के युग में इसके तरीके लिव इन रिलेशनशिप या करार या बार डांस या हुक्का बार या कॉल गर्ल आदि नामों से तब्दील होती जा रही है ।चंपा जैसी औरतें उस युग में और आज भी राज कर रही हैं ।निश्चित रूप से फकीर मोहन सेनापति बहुत ही जीवंत भाषा में उपन्यास लिखकर भाषा ,समाज एवं संस्कृति के तमाम स्तरों को उघाड़ा है । युगजीत नवलपुरी ने छै बीघा जमीन का अनुवाद करते समय स्रोत एवं लक्ष्य भाषा की समग्र प्रकृति का आद्यंत ध्यान रखा है। कालिंदी चरण पाणिग्रही का मंतव्य है कि "चित्रण दोषों से सर्वथा मुक्त चित्रांकन, वास्तविकता से लिए गए जीवन–चित्र तथा लेखक की अनुकरणीय शैली 'छै बीघा जमीन' को कला के चरम उत्कर्ष की एक कृति बना दिया है।' कालांतर में इस कथा तथा इसमें विवेचित समस्याओं की अर्थवत्ता का महत्व घट सकता है, परंतु मानव स्वभाव के मौलिक तथ्य तथा जीवन के मौलिक मूल्य फिर भी सदा बने रहेंगे और उड़िया साहित्य के चरम उत्कर्ष की एक कृति के रूप में इस पुस्तक ने आकर–साहित्य का जो पद प्राप्त किया है, उसके गुण सदा अक्षुण्ण रहेंगे।"[25] बंगला, मराठी एवं हिंदी से पहले फकीर मोहन सेनापति भारतीय समाज में व्याप्त नाना प्रकार के दुर्गुणों को उपन्यास के मारफत रखा था। आजादी के अमृत महोत्सव में ललितादास जैसे बाबा हर जगह दिखाई दे रहे हैं। सांस्कृतिक राष्ट्र की दुहाई देने के बजाय उसे जीवन में हर व्यक्ति उतारेगा तो आगामी पीढ़ी सांस्कृतिक राष्ट्र को समझ पाएगी। बोधगम्य संवाद वस्तुस्थियों को पारदर्शक भाषा में उभारने में सक्षम है। कमोवेश Three W

(धन, शराब और औरत) शिक्षा धर्म, राजनीति एवं समाज सबको चौपट करते जा रहे हैं और सरकारें नशामुक्ति, एड्स दिवस मनवा रही हैं। मंगराज के बेटों का पतन, दिलदार मियां का पतन बहुत कुछ इंगित कर रहा है। आज तो बिचौलियों का बोलबाला है। रामचंद्र मंगराज जैसे लोग शिक्षा, धर्म राजनीति एवं समाज को चौपट करने में उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण का फण्डा अपना रखा है। आदिवासियों एवं किसानों की जमीनों को सड़क, रेल, वायुयान, बाँध , उद्योग एवं मंदिर के नाम अधिगृहीत किया जा रहा है। जल, जंगल एवं जमीन की कमी मानवता के लिए खतरा है। 'गायब होता देश,' 'ग्लोबल गाँव का देवता','फाँस' एवं 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ' के मारफत बहुत कुछ देखा-समझा जा सकता है। पाँच बीघे का होरी, छै बीघे का भगिया- सारिया, आज के किसान एवं आदिवासी बेदखल होते जा रहे हैं। पुरस्कारों का मायाजाल लेखकों को उपकृत भी कर रहा है। कहीं न कहीं सम्प्रेषणीय, मुहावरेदार एवं रवानगीपूर्ण भाषा शैली उस समय की एवं आज की विसंगतियों से तालमेल बैठाती दिखायी दे रही है। विकास के नाम भूमि अधिग्रहण कानून कहीं न कहीं मानवता के लिए खतरा है। न्याय व्यवस्था वाणिज्यिक कॉम्प्लेक्स में तब्दील होती जा रही है। किसी भी भाषा का लेखक मानवता को बचाना चाहता है। केदारनाथ अग्रवाल के शब्दों में "मैं उसे खोजता हूँ / जो आदमी है / और / अब भी आदमी है। तबाह होकर भी आदमी है। चरित्र पर खड़ा / देवदार की तरह बड़ा" साहित्य लेखन एक तरफ, तो भ्रष्टाचार दूसरी तरफ बढ़ता जा रहा है। इस विसंगति की चुनौती को समझकर लेखक बना जाय।

सन्दर्भ

1- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पूर्विका पृष्ठ–5–6

2- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–9

3- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–15

4- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–21

5- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–23

6- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–32–33

7- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–39

8- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–50

9- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–55

10- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–68

11- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–76

12- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–78

13- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–86

14- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–95

15- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–109

16- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–112

17- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–117

18- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–134

19- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–138

20- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–140–141

21- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–144

22- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–49

23- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–127

24- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–121

25- छै बीघा जमीन: फकीर मोहन सेनापति: पृष्ठ–8

पता: आराजी सं.18

चकतेजऊ दीक्षित, गंगापुरम, नैनी प्रयागराज 211008

shukla.shiv67@gmail.com /7016394609/9409214619